RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

फरवरी 2017(प्रथम)

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस विशेषांक

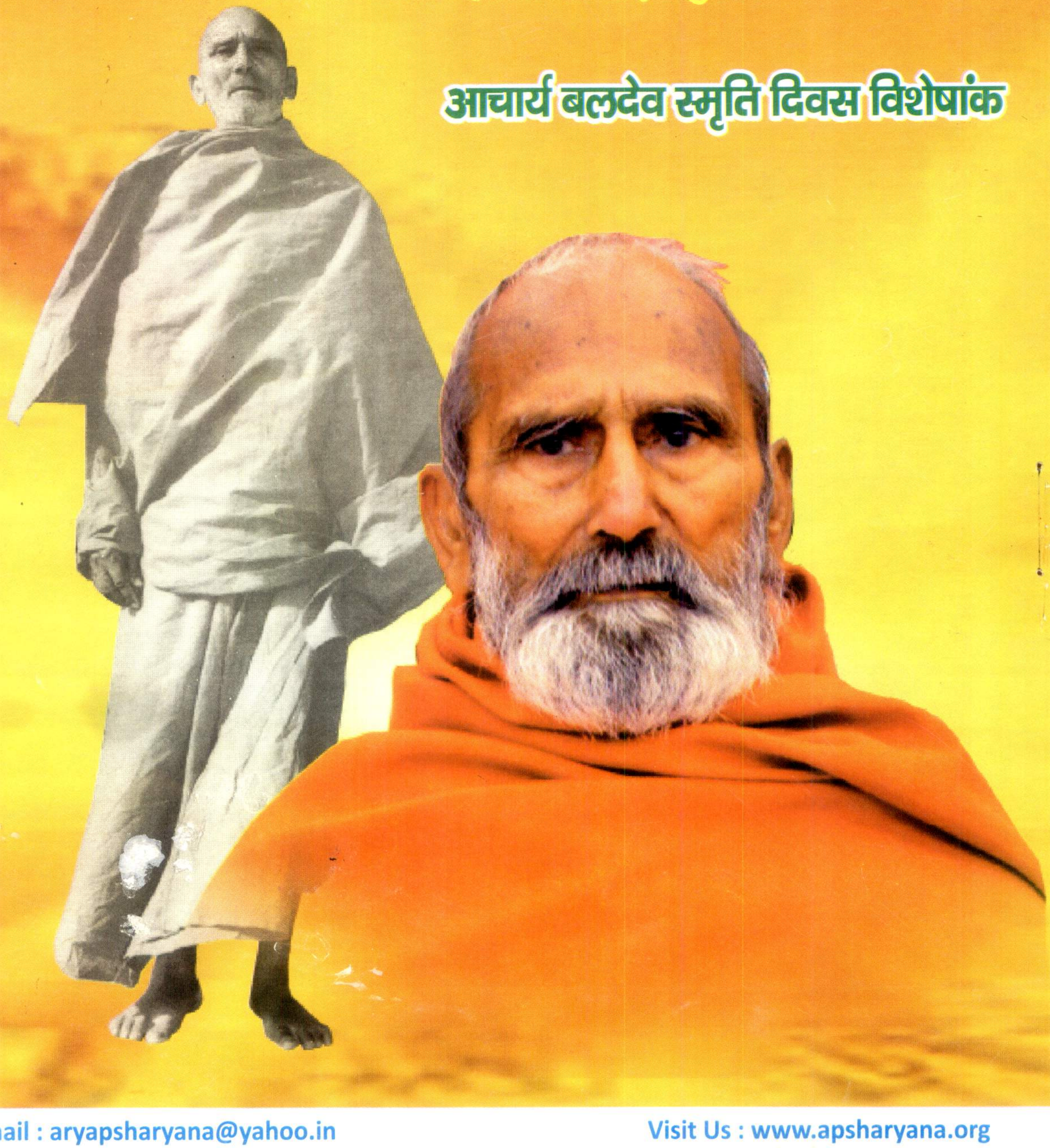

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit Us : www.apsharyana.org

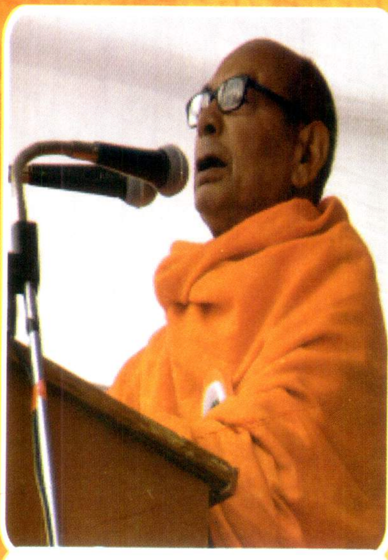
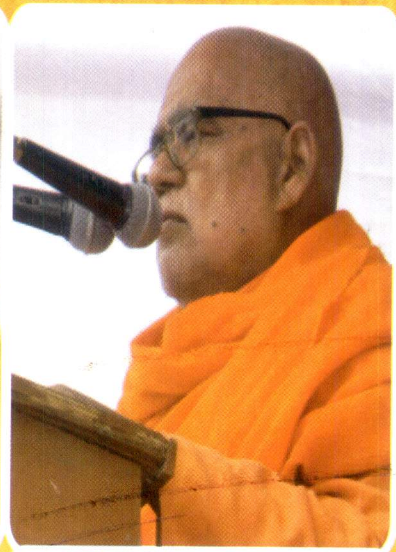
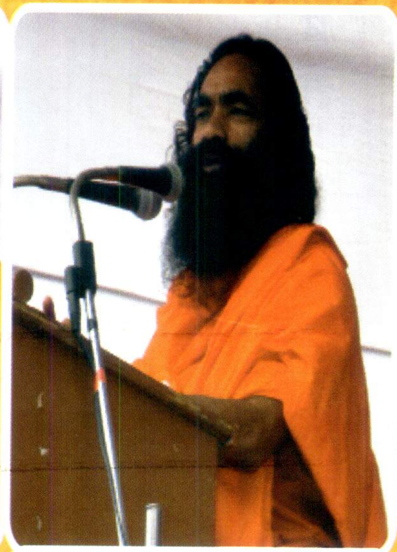
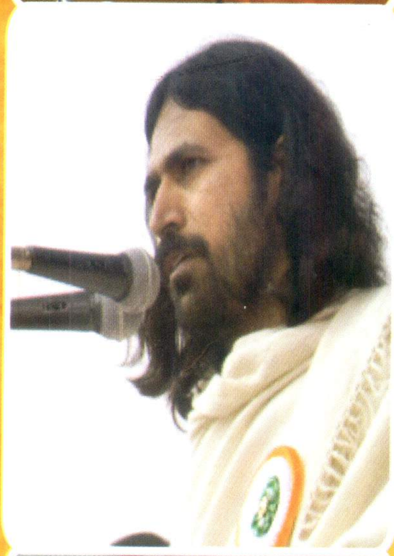
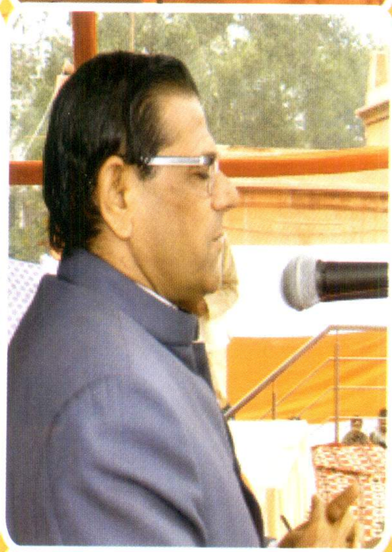

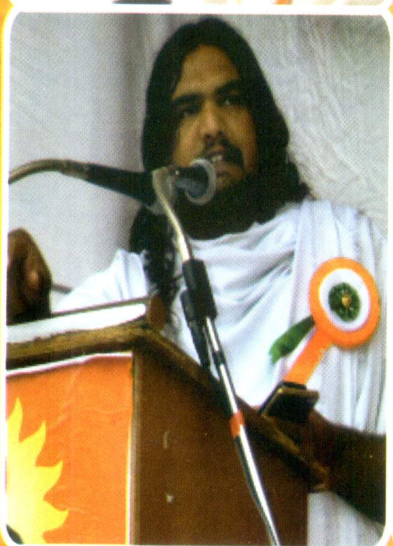
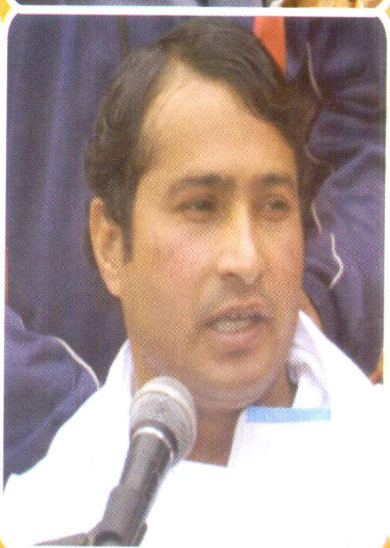
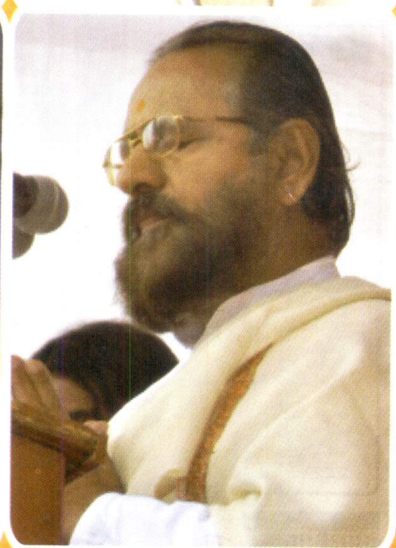

सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख पत्रिका

वर्ष 13 अंक 1

सम्पादक :
आचार्य योगेन्द्र आर्य

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-150 रुपये आजीवन-1500 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 75 डॉलर
आजीवन 300 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल
1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान आर्य

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

ओ३म्

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

फरवरी, 2017 (प्रथम)
1 से 15 फरवरी 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय....दयानन्द परम्परा के विलक्षण सन्त 2
2. धन्य थे गुरुवर हमारे.... 4
3. आचार्य बलदेव जी : जैसा मैंने जाना 5
4. पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज 6
5. एक सदाचारी व मर्यादित व्यक्तित्व 7
6. ऐसे थे गुरुवर हमारे 9
7. एक दिव्य प्रेरणा-पुंज 10
8. आयुर्वेद-मर्मज्ञ थे पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी 11
9. आचार्य बलदेव जी का व्यक्तिगत परिचय 12
10 आर्य प्रतिनिधि समाचार-पत्र में आचार्य जी द्वारा लिखे गए लेखों की झलकियाँ 14
11. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
aryasabhaharyana@gmail.com

 योगाभ्यासी व्यक्ति का लौकिक व्यवहार भी अच्छा होना आवश्यक है।

दयानन्द परम्परा के विलक्षण सन्त

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आदिकाल से भारत भूमि ऋषियों की भूमि रही है। इसी भारत भूमि पर हजारों, लाखों ऋषि पैदा हुए जिन्होंने न केवल अपने जीवन को श्रेष्ठ, सुखी एवं आनन्दित बनाकर चरम सुख ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त कर परमपद को पाया अपितु समस्त संसार को इसका रास्ता दिखाया कि किस प्रकार प्रत्येक मनुष्य तीनों प्रकार के दुःखों एवं पांचों प्रकार के क्लेशों से बच सकता है और अपने जीवन को सुखी एवं आनन्दित करते हुए ईश्वरीय आनन्द मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। सृष्टि रचना के बाद प्रथम चारों ऋषियों को पैदा करने का गौरव भी इसी भारत भूमि को है। परमपिता ने चारों ऋषियों को इसी भूमि पर पैदा किया क्योंकि मानव की सृष्टि एवं सभ्यता का आरम्भ और विस्तार यहीं से हुआ है।

ऋषियों की इसी परम्परा में समय-समय पर इस भारत भूमि पर अनेक ऋषि पैदा होते रहे और मनुष्यों को ईश्वरीय ज्ञान वेद का ज्ञान देते रहे और मानवों को वेदज्ञान से तृप्त करते रहे। महाभारत काल तक यह परम्परा अनवरत चलती रही परन्तु महाभारत युद्ध से यह श्रृंखला टूट गई। एक बहुत बड़े कालखण्ड में एक भी व्यक्ति ऋषिकोटि को प्राप्त कर पाया हो, यह प्रतीत नहीं होता। हालांकि ये काल खण्ड विद्वानों, संन्यासियों एवं परोपकारी व्यक्तियों से पूर्णतया रिक्त नहीं था। इस काल खण्ड में हजारों व्यक्ति ऐसे हुए जिन्होंने वेदमाता के ज्ञान से ज्ञानपिपासुओं की पिपासा को शान्त किया एवं वैदिक संस्कृति, सभ्यता की रक्षा करते हुए मनुष्यों में वैदिक एवं मानवीय जीवन मूल्यों को बनाये रखा।

हजारों वर्षों के अकाल के बाद उस परमपिता की असीम कृपा हुई। पिता ने एक ऐसी दिव्यात्मा को इस भारत भूमि पर पैदा किया जो हजारों वर्षों से चले आ रहे ऋषियों के अकाल को समाप्त कर देने वाला था। खण्ड-खण्ड, क्षत-विक्षत हुई वैदिक संस्कृति एवं वैदिक जीवन मूल्यों को पुनर्स्थापित करने वाला था जिनका वर्तमान समय में कोई औचित्य नहीं बचा था। विश्वविजयी संस्कृति एवं भारत भूमि के लाल दानवी संस्कृति एवं राक्षसों के पराधीन होकर शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक समस्त प्रकार के ऐश्वर्यों से हाथ धोकर उसी पैशाचिक संस्कृति को श्रेष्ठ मान बैठे थे और उसी दानवी संस्कृति को अपना गौरव मान बैठे थे। टंकारा में पैदा हुई उस दिव्यात्मा ने कठोर साधना, उच्च आध्यात्मिक चेतना, वज्र समान शरीर एवं प्रत्युत्पन्न बुद्धि के बल पर उस परम कल्याणकारी 'ऋषित्व पद' को पा लिया। परमपिता परमेश्वर के वेदज्ञान को पुनः मनुष्यों के सामने रखा और फिर से देश में वैदिक संस्कृति एवं वैदिक जीवन मूल्यों का डंका बजा दिया। ऋषि ने यह सिद्ध कर दिया कि वेदज्ञान ही निर्भ्रान्त ज्ञान है और वैदिक संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। यही वैदिक जीवन मूल्य है जिस पर चलकर मनुष्य सुखी हो सकता है अन्यथा नहीं।

वह ऋषि देव दयानन्द थे, जिन्होंने यह सर्वप्रथम घोषणा की कि ''चाहे कोई कितना भी करे परन्तु स्वदेशी राजा ही सर्वोपरि होता है।''

ऋषि दयानन्द की इसी वैदिक परम्परा में अनेक साधु-संन्यासी एवं विद्वान् हुए जिन्होंने अपने-अपने बल-बुद्धि एवं सामर्थ्य से भारत भूमि की सेवा की और ऋषि की संस्था 'आर्यसमाज' को विश्वपटल पर स्थापित किया। उसी दयानन्द परम्परा में भारत भूमि की सेवा, आर्यसमाज के प्रचार एवं ईश्वर प्राप्ति की भावना लिये सरकारी नौकरी एवं सांसारिक सुखों को ठोकर मार पूर्ण यौवन को प्राप्त एक युवक घर छोड़ देता है जिसका नाम था 'बलदेव'। उस युवक बलदेव ने आचार्य बलदेव बनने के सफर में दयानन्द समान कठोर साधना एवं तपस्या के बल पर एक विशेष स्थान प्राप्त किया और

प्रतिकूलता में रुष्ट तथा खिन्न हो जाना विवेक-वैराग्य की प्राप्ति में बाधक है।

दयानन्द परम्परा के सच्चे संवाहक बने, ऋषि के गुणों को अपने जीवन में धारण कर उन गुणों को जीकर दिखाया।

ऋषि के गुणों और आचार्य श्री के अनेक गुणों में समानता देखी जा सकती हैं। जिस प्रकार का दयानन्द का अत्यन्त उज्ज्वल चरित्र था विरोधी भी उनके उज्ज्वल चरित्र का लोहा मानते थे। हूबहू आचार्य श्री भी निर्भ्रान्त चरित्र के धनी थे। सामाजिक जीवन में आचार्य श्री के अनेक विरोधी रहे परन्तु कोई भी उनके चरित्र पर उंगली नहीं उठा पाया। उठाता भी कैसे, आचार्य श्री इतने सावधान थे कि उनके बारे में कहना तो दूर लोग सोचते भी नहीं थे। जिस प्रकार ऋषि माताओं का सम्मान करते थे उसी प्रकार आचार्य श्री भी करते थे। उन्होंने किसी भी महिला से अपना सम्मान नहीं करवाया। उच्च आध्यात्मिक चेतना वाले व्यक्तियों के गुणों में समानता तो होती ही है। भर्तृहरि जी लिखते हैं—

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी,
सत्यं मित्रमिदं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनम्,
ह्येते यस्य कुटुम्बिनो वद् सखे कस्माद् भयं योगिनः॥

जिस प्रकार अनेक विपत्तियां आने पर भी ऋषि धैर्य नहीं खोते थे उसी पर आचार्य श्री को भी हमने कभी धैर्य खोते नहीं देखा। जिस प्रकार ऋषि अपना बुरा करने वाले को क्षमा कर देते थे उसी प्रकार आचार्य श्री पर भी लोगों ने बहुत कीचड़ उछाला परन्तु आचार्य श्री बिलकुल शान्तचित्त, कोई प्रतिशोध की भावना नहीं। जिस प्रकार का मानसिक संयम ऋषि का था आचार्य श्री को भी संयम खोते शायद ही किसी ने देखा हो। अपरिग्रह का पालन जितना महर्षि करते थे उतना ही आचार्य श्री करते थे। गंगातट पर विचरण करते हुए महर्षि कहीं भी रेत पर सो जाते थे वैसे ही हमारे आचार्य श्री भी थे। आचार्य श्री की प्रेरणा से ही मैं घर छोड़कर दयानन्दमठ आ गया था। जुलाई महीने की रात को मैं सिद्धान्ती भवन की छत पर लेटा था। इस प्रकार सोने की आदत न होने के कारण नींद नहीं आ रही थी इसलिए करवटें बदल रहा था। एक तो गर्मी अधिक थी ऊपर से मच्छर काट रहे थे। इस कारण बेचैन था। नीचे आचार्य श्री के कमरे में इनवर्टर था इसलिए मन पक्का था कि आचार्य श्री कमरे में ही होंगे परन्तु जैसे ही मैं लघुशंका के लिए उठा मैंने देखा कि सामने दीवार पर कोई लेटा है वह भी नंगा। दूसरी तरफ 10-12 फीट गहराई थी। गिरने पर बचना मुश्किल था। सोचा कि उठा दूँ कहीं कोई गिर जाए। जैसे ही मैं उनकी तरफ चला आचार्य श्री उठकर बैठ गये। यह देखकर मैं सन्न रह गया। जब कमरे में पंखा है, इनवर्टर है, तो कोई नंगा-धडंगा गरमी और मच्छरों में कैसे सो सकता है। उस रात मैं सो नहीं पाया। सोचता रहा कि कैसी बुद्धि के व्यक्ति हैं कि उपलब्ध साधनों का उचित उपयोग भी नहीं करते। आचार्य श्री के साथ लम्बे समय तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनेक बार आचार्य श्री ने आश्चर्यचकित किया, सोचने पर मजबूर किया कि कौन से युग के व्यक्ति हैं ये। इस युग के तो हो नहीं सकते, क्योंकि साधु हो या संन्यासी आज इन्द्रियों के गुलाम प्रतीत होते हैं, सांसारिक सुखों को अधिक से अधिक भोग लेना चाहते हैं फिर चाहे साधु हो या संन्यासी।

कहते हैं कि सामाजिक जीवन में अर्थ-शुचिता सबसे बड़ी शुचिता होती है। आचार्य श्री की अर्थ-शुचिता कितने ऊँचे स्तर की थी इसके बारे में एक घटना याद आ गई। आचार्य श्री किसी से भी मांगते नहीं थे, कोई दे भी तो मना कर देते थे। जो जानते थे वे धक्के से दे देते थे। इसलिए मुश्किल से ही काम चलता था। एक बार सभा की गाड़ी खराब हो गई तो सभा कार्य से आचार्य श्री की गाड़ी प्रयुक्त हुई। सभा की गाड़ी लगभग 15 दिन में ठीक हुई। सभा कार्य के लिए आचार्य श्री की गाड़ी में लगभग 30 हजार का डीजल लगा। गणक जी ने बिल मुझे देते हुए कहा कि यह बिल आचार्य श्री को दे देना। मैंने कहा कि आचार्य श्री के पास तो पैसे ही नहीं हैं। गणक जी बोले कि फिर भी आप आचार्य श्री से बात

कर लेना। मैंने आचार्य श्री से कहा कि आपकी गाड़ी सभा कार्य से चली है तो उसके बिल सभा में जमा करा देता हूँ। आचार्य श्री ने टका जवाब दिया नहीं मैं दूँगा। मैंने कहा कि आप कहाँ से देंगे, आपके पास कहाँ है ? आचार्य श्री बोले इससे तेरे को क्या मतलब मैं कहीं से दूँ। ये मेरा नियम है कि मेरी गाड़ी किसी के भी काम से जाये उसका खर्चा मैं ही उठाऊँगा। यह उत्तर सुनकर मेरा दिमाग सन्न था। आचार्य श्री का पूरा जीवन परोपकार के लिए था। अपने लिए तो उन्होंने कभी सोचा ही नहीं। भर्तृहरि जी महाराज कहते हैं—**'एके सत्पुरुषा परार्थ-घटकाः स्वार्थान्परित्यज्य ये'**। अर्थात् धन्य हैं वे सत्पुरुष जो अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए अपना तन-मन-धन लगा देते हैं। वे फिर लिखते हैं—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

कहते हैं कि इस संसार में वृक्ष फल फूल वनस्पतियां, नदियां केवल परोपकार के लिए ही हैं। उपकार के लिए गायें दूध देती हैं। इसलिए धन्य है वह व्यक्ति जिसका शरीर ही दूसरों पर उपकार के लिए बना है।

आचार्य श्री का जीवन भी सदा परोपकार के लिए बीता। दूसरों का कितना ख्याल रखते थे परन्तु अपने लिए कुछ नहीं। दूसरों की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान अपने लिए कुछ भी नहीं।

मैं तो आचार्य श्री का ऋणी हूँ ही, क्योंकि बहुत कुछ सीख पाया है उनके जीवन से, जो शायद किसी के पास न हो अपितु हर वह व्यक्ति ऋणी है जिसने आचार्य श्री से कुछ भी प्रेरणा प्राप्त की है।

कृतज्ञ हैं हम परमपिता के जिसने उन महामानव को भेजा, क्योंकि ऐसी महान् विभूतियां, महामानव कभी-कभी ही जन्म लेती हैं, जो प्राणिमात्र के उपकारी हों।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपुर्णास्
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरभाणून पवलीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्त सन्ति सन्तः कियन्त॥

धन्य थे गुरुवर हमारे...

टेक-धन्य थे गुरुवर हमारे, काम कितना कर गये।
साथ में थे लोग जितने, सब यहीं पर रह गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

1. उस प्रभु के इस जहां में, आते-जाते हैं ये लोग।
जश्न होता है जनम पर, हंसते गाते हैं ये लोग।
जन्म होता है सफल तब, जैसा गुरुवर कर गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

2. जन्म से गुरुदेव जी ने, व्रत ही ऐसा ले लिया।
उस प्रभु को सारा जीवन, यूं ही बस अर्पण किया।
हौसले कितने अडिग थे, सबको मंजिल दे गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

3. जो भी आ जाता शरण में, बोलते थे प्यार से।
नमस्ते कर कहते थे बैठो, स्वच्छ मन आचार से।
पूछते फिर हाल कैसा, कुछ बताओ, कह गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

4. वैसे तो गुरुवर जी क्या थे, मैं तो कह पाता नहीं।
ज्ञान की वह दिव्य ज्योति, कुछ कहा जाता नहीं।
स्वामी जी ने जो कहा था, उसको पूरा कर गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

5. इनके अधूरे कार्य को अब, पूरा करना है हमें।
हर तरफ से हम सबल हों, दो प्रभु शक्ति हमें।
आर्यों की उत्तम छवि को, आगे कर, यह कह गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

6. अब तो गुरुवर की वो बातें, याद आती है 'सरस'।
कह गये जो काम तुमको, बस वही तू कर 'सरस'।
एक ईश्वर का भजन कर, ऐसा गुरुवर कह गये।
धन्य थे गुरुवर हमारे....।

—सुरेन्द्र कुमार 'सरस', रोहतक

आचार्य बलदेव जी : जैसा मैंने जाना

—मा० रामपाल आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

जैसा कि आप सभी जानते हैं श्रद्धेय आचार्य श्री बलदेव जी महाराज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनके द्वारा किए गए कार्यों से हम सब सदैव प्रेरणा और शिक्षा प्राप्त करते रहेंगे। आचार्य जी कहने की बजाय हमेशा करने में विश्वास रखते थे। आचार्य जी एक महान् गोभक्त थे। जिस समय आचार्य जी ने गोशाला संघ का कार्यभार संभाला उस समय हरियाणा में बहुत कम गोशालाएं थीं, जिसके कारण गाय की बड़ी दुर्दशा होती थी। आचार्य जी ने अनेक गोशालाओं का निर्माण करवाया। मैं सन् 1999 में आचार्य जी के सम्पर्क में आया उस समय आचार्य जी गुरुकुल कालवा में थे। मैं आचार्य जी को जानता तो पहले से ही था आदर्श गोसेवक होने के साथ-साथ आचार्य जी एक श्रेष्ठ और आदर्श गुरु भी थे। उन्होंने सैकड़ों नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को तैयार किया जो पूरे भारत में आर्यसमाज का डंका बजा रहे हैं।

सन् 2003 में आचार्य जी दयानन्दमठ रोहतक में आये और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान पद का कार्यभार संभाला और फिर गांव-गांव घूमकर आर्यसमाज का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। आचार्य जी प्रतिदिन दो-दो, तीन-तीन गांवों में जाकर प्रचार करते थे। कई-कई गांवों में घूमने के बाद भी कभी हमने आचार्य जी के चेहरे पर थकान नहीं देखी। यह सब उनके ब्रह्मचर्य का प्रताप था। कई बार रात को जब प्रचार से लौटते तो 11 या 12 भी बज जाते थे, लेकिन आचार्य जी सुबह तीन बजे से पहले उठकर हमेशा अपनी दिनचर्या में लग जाते थे और चार बजे उन सभी लोगों को भी उठाते थे जो मठ में रहते हैं।

अनेक बार मुझे भी आचार्य जी के साथ घूमने का अवसर मिलता रहता था। मुझे सन् 2005 में मना करने के बाद भी गोशाला संघ का मन्त्री बनाया और मैं उनके आदेश को टाल न सका। उनका जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण रहा। आचार्य श्री ने अनेक आन्दोलन किए जैसे 2006 में रामपालदास के दुराचार के खिलाफ सत्याग्रह, संस्कृत बचाओ आन्दोलन, कॉमनवेल्थ खेलों में गोमांस परोसने के विरोध में आन्दोलन, गऊरक्षा आन्दोलन, 2013 में करौंथा में रामपालदास के खिलाफ आन्दोलन तथा उन्होंने जितने भी आन्दोलन किए सभी में सफलता प्राप्त हुई। आचार्य जी ईश्वर में विश्वास रखते थे और ईश्वर के परमभक्त थे तथा कहते रहते थे कि धर्म के कार्यों में लगे रहो परमात्मा अवश्य सफलता प्रदान करेगा।

28 जनवरी 2016 को सुबह आचार्य जी का निधन हो गया। उनके निधन से मानो मेरे ऊपर मुसीबतों का पहाड़-सा टूट गया। आचार्य जी के आर्यसमाज के अलावा सभी वर्गों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसी कारण उनकी मृत्यु की सूचना मिलते ही हजारों की संख्या में लोग अन्तिम दर्शनों को पहुँचे और नम आंखों से आचार्य जी का अन्तिम संस्कार हुआ।

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में अधिकारी रहते हुए कभी अपने आपको ऊँचा नहीं समझा। वे सभी कर्मचारियों से स्नेह रखते थे, चाहे वह छोटा हो अथवा बड़ा। सभी कर्मचारियों के पास जाकर उनसे उनका कुशलक्षेम पूछते रहते थे। यदि किसी कर्मचारी को कोई परेशानी भी होती थी तो उसे हल करने की पूरी कोशिश करते थे। आचार्य जी सभा में अधिकारी की तरह नहीं बल्कि एक सन्त की तरह अपना जीवन व्यतीत करते थे। इसी प्रकार कर्मचारी भी उनसे अधिक स्नेह रखते थे। ऐसे महान् संत संसार में विरले ही मिलते हैं जो सदैव परोपकार की भावना से ओतप्रोत हों। —सभा कार्यालय, रोहतक

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

❑ आचार्य कर्मवीर मेधार्थी वेदप्रचाराधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

1. जन्म एवं बचपन–आचार्य श्री बलदेव जी का जन्म हरयाणा प्रान्त के सोनीपत जिले में सरगथल नामक गांव में माघ मास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा सम्वत् 1987 (19 जनवरी 1931) को श्री गूगनसिंह एवं माता मनभरी देवी के घर हुआ।

2. शिक्षा–आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सरगथल गांव में ही हुई। पांचवीं पढ़ने के बाद आप गांव से लगभग 8 किलोमीटर दूर जूआं गांव में पढ़ने के लिए पैदल ही आने जाने लगे। आठवीं तक इसी गांव में उर्दू माध्यम से पूरी की और उसके बाद गोहाना उच्च विद्यालय में प्रवेश लिया। यहाँ से आपने 1949 में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई के लिए आपने जाट कालेज रोहतक में प्रवेश लिया यहां आपने एफ.एस-सी. की और उसके बाद यहीं से बी.ए. पास की। गांव सरगथल का मानना है कि उस समय आचार्य बलदेव जी गांव के पहले ग्रेजुएट व्यक्ति थे।

3. नौकरी–बी.ए. के बाद आप विद्युत् विभाग में उच्च पद पर सेवारत हो गये। इन दिनों आपका गुरुकुल भैंसवाल में आना-जाना रहता था। अवकाश के दिनों में आप गुरुकुल के विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढ़ाते थे। कुछ दिनों बाद आपका संपर्क गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) जी से हो गया। सन् 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन की अगवानी स्वामी ओमानन्द जी कर रहे थे तो आप भी साथ हो लिये। पुलिस द्वारा आपका परिचय जानने पर पुलिस अधिकारी ने आपसे कहा-''सरकारी विभाग में कार्यरत हो और सरकार के खिलाफ लड़ रहे हो, इससे आपकी नौकरी को खतरा है।'' तो आपने कहा कि ''मैं आज ही नौकरी से त्यागपत्र देता हूँ।'' और आपने नौकरी छोड़कर गुरुकुल झज्जर में रहना शुरू कर दिया।

4. ब्रह्मचर्य की भीष्म प्रतिज्ञा–गुरुकुल झज्जर में ही रहते हुए आपने आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली और आजीवन समाजसेवा का व्रत लिया।

5. शिक्षा–आचार्य बलदेव जी अपने साथी स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ आर्षविद्या पढ़ने के लिए सर्वप्रथम गुरुकुल मैनपुरी (उत्तर-प्रदेश) में गये। यहाँ आपने अष्टाध्यायी व्याकरण का अध्ययन प्रारम्भ किया। उसके बाद सिरसागंज (उत्तर-प्रदेश) में आचार्य श्री देवस्वामी जी से तथा उसके बाद नौनेर (उत्तर-प्रदेश) में आचार्य शंकरदेव जी से व्याकरण महाभाष्य किया। उसके बाद आप गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार तथा ब्रह्ममुनि जी से निरुक्त का अध्ययन किया। बाद में आपने पंडित महावीर मीमांसक जी से न्यायदर्शन और आचार्य सुदर्शनदेव जी एवं आचार्य राजवीर शास्त्री से अन्य दर्शनों का अध्ययन किया।

6. गुरुकुल झज्जर–अध्ययन पूरा होने के बाद आप गुरुकुल झज्जर में आचार्य पद पर रहकर लगातार दस वर्षों तक पढ़ाते रहे एवं आस-पास काम भी करते रहे।

7. गुरुकुल कालवा आगमन–जून 1971 में आचार्य श्री गुरुकुल कालवा पहुंचे। उस समय गुरुकुल कालवा का स्वामी चन्द्रवेश जी एवं स्वामी सत्यवेश जी संचालन कर रहे थे। इसके बाद यहां की प्रबन्धकर्तृ सभा ने आचार्य बलदेव जी को पूर्ण अधिकार सहित यह गुरुकुल समर्पित कर दिया। श्रावणी पर्व संवत् 2071 से यहां नवीन सत्र विशेष परिवर्तनों के साथ प्रारम्भ किया जिसमें केवल जो आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती रहने वालों को ही पढ़ाया जाएगा।

8. गोशाला धड़ौली का निर्माण–18 अक्तूबर 1990

क्रमशः पृष्ठ 8 पर......

एक सदाचारी व मर्यादित व्यक्तित्व

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

दिनांक 7.2.2017 को सायंकाल लगभग 5 बजे आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का फोन आया कि सभा की पत्रिका 'आर्य प्रतिनिधि' जो साप्ताहिक से पाक्षिक कर दी गई है, उसका पहला अंक आचार्य बलदेव जी की स्मृति में समर्पित कर रहे हैं। मैंने सूचना के लिए उनका धन्यवाद किया। अनेक प्रसंगों में आचार्य योगेन्द्र जी का स्नेह, सम्मान हृदय से मुझे मिलता रहता है। फिर से धन्यवाद। 'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका की मैं पिछले लगभग 13 वर्ष से नियमित सेवा कर रहा हूँ। नए कलेवर के प्रथम अंक में प्रथम लेख अपने आदर्श पुरुष आचार्य बलदेव जी के विषय में लिखना-सौभाग्य की बात।

आचार्य बलदेव जी तप से उत्पन्न एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी तरफ आकर्षित होना स्वाभाविक ही था। यही कारण था कि जो भी उनके सम्पर्क में आता, वही सोचने लगता था कि वही आचार्य जी के सबसे सन्निकट है, उसी से आचार्य जी सबसे अधिक स्नेह करते हैं, उसी पर सबसे अधिक विश्वास करते हैं। मेरा भी ऐसा सोचना स्वाभाविक था। यही वह आकर्षण था, यही वह सोच थी, यही वह विश्वास था, जिससे स्नेह की वह डोर बंधी जो अन्त समय तक नहीं टूटी और आजीवन यह संतोष रहेगा कि इस डोर में कहीं भी, कभी भी अश्रद्धा, अविश्वास की ग्रंथि नहीं पड़ी। लगभग 12 वर्ष उनके जैसी श्रेणी के साधु के साथ निरन्तर सामाजिक कार्य करते हुए ऐसा व्यवहार रह पाया, इसका सदा सन्तोष रहेगा। उन्होंने अपने जीवन में सदाचार व मर्यादा का पालन किया, इससे उनका व्यक्तित्व विलक्षण बन गया था। सदाचार जो परम धर्म है, सदाचार ही धर्म का लक्षण है, यह सदाचार का गुण उन्हें पूर्वजन्म के संस्कारों से ही मिला था। उनका पालन करने वाली माता छन्नोदेवी ने मुझे बताया था कि वे आरम्भ से ही ऐसे थे। किसी से परिवार का छोटा-मोटा विवाद भी होता तो उसके पास से गुजरते हुए भी उसे 'नमस्ते' अवश्य करते थे। सभी आर्यजनों ने उनका यह गुण देखा कि फोन पर किसी से बात करते हुए प्रथम ही 'नमस्ते' कह देते थे। ऐसे आचरण से आयु, विद्या, यश, बल बढ़ता है, वे इस शास्त्रीय वचन और उसके फल के प्रत्यक्ष प्रमाण थे। जब वे कालेज में कुर्ता, पायजामा डालकर व चोटी रखकर जाते तो अन्य युवा उनकी हंसी करते हुए कहते थे कि यह तू किस तरह रहता है? उस समय ये हाथ जोड़कर कह देते थे कि मैं तो ऐसा ही हूँ। ज्ञात रहे ऐसे रहना इनकी मजबूरी नहीं थी, क्योंकि इनके पिता गांव के बड़े जमींदार थे। अपने साधु स्वभाव के चलते ये इस तरह रहते थे। धनी होकर भोगों में न फंसकर तप का जीवन जीने वाला व्यक्ति बहुत महान् होता है। सदाचारी व्यक्ति को सज्जन कहते हैं। परोपकार के लिए ही सज्जनों का जीवन होता है। स्वयं उन्होंने मुझे एक बार बताया कि मैं बचपन में नवजात कुत्तों के लिए घर बनाता था। बारिश में उसे पुराली व बोरी से ढक देता था व बार-बार उसे संभालकर आता था। बाद में इसी आचार्य ने अपने सत्योपदेश से कितने मनुष्यों का, अपनी सेवा से महापरोपकारी मूक प्राणी गौ का कितना उपकार किया, यह सब अपने आप में एक इतिहास है, जिस पर वक्ता अपने-अपने ढंग से व्याख्यान देते रहेंगे व लेखक लेख लिखते रहेंगे।

इस मर्यादित पुरुष ने जिस आयु में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके, जिस मर्यादा से उसे निभाया वह एक दैवीय कार्य है। इसने उन्हें देवताओं की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। उन्होंने अपना नाम सार्थक सिद्ध कर दिखाया। उनकी उपस्थिति मात्र बल प्रदान करती थी। उनके साथ हम गांव-गांव घूमकर प्रचार करते थे। एक बार तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि मौसम बिगड़ने से

एक गांव में उपस्थिति दस से भी कम थी। लेकिन आचार्य बलदेव जी हमारे मध्य में उपस्थित थे, अतः हम पूरे विश्वास से प्रचार करके ही लौटे। उस समय सभा के भजनोपदेशक श्री महेन्द्र जी व गुरुकुल सिंहपुरा से आचार्य शम्भूमित्र हमारे साथ थे। उनके शरीर त्यागने से कुछ ही महीने पहले की बात है कि मुझसे पूछने लगे कि सुबह आपके विद्यालय जाने से पहले ही माता जी भोजन बना देती होंगी। मैंने कहा कि मेरी माता जी तो गांव में हैं। उन्होंने थोड़ा धीमे स्वर बदलकर कहा नहीं, वह माता जी की पूछ रहा हूँ। मेरे विचार में पहले क्यों नहीं आया कि मेरी पत्नी के बारे में पूछ रहे हैं। आचार्य जी को पता है कि मेरी माता जी तो गांव में रहती हैं, मुझे पता लग जाना चाहिए था कि ये तो मेरी पत्नी के बारे में बात कर रहे हैं। एक चालीस वर्ष से भी कम आयु की महिला को 'माता' कहना, यह उनके ब्रह्मचर्य की मर्यादा थी। ब्रह्मचारियों को पढ़ाने में उन्होंने जिन मर्यादाओं का पालन किया, उनके बारे में मैंने और आपने स्वामी प्रणवानन्द, आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः, आचार्य अखिलेश्वर आदि से अनेक प्रसंग सुने हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम कहने से श्रीराम का, धर्मराज कहने से युधिष्ठिर का, महाराणा कहने से प्रताप का, नेताजी कहने से सुभाष का ग्रहण होता रहेगा, उसी प्रकार '**आचार्य जी**' कहने से आचार्य बलदेव का ग्रहण होता रहेगा।

वे तपस्या के धनी थे, महाविद्वान् थे, ब्रह्मचारी थे, व्यावहारिक थे, सदाचारी थे, परोपकारी थे। उनके बारे में कभी '**परोपकारी**' पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपा यह विशेषण मुझे बहुत रुचिकर लगता है—'**आर्यसमाज के तपःपूत**'। वे शास्त्रों में वर्णित ऐसे पूजनीय पुरुषों के लक्षणों से युक्त थे जिनका अपमान करना या जिन्हें कष्ट पहुँचाना ब्रह्महत्या के समान पाप समझा गया है।

पूज्य आचार्य बलदेव जी...पृष्ठ 6 का शेष....

को दीपावली के शुभ अवसर पर गोशाला धड़ौली की नींव रखी गई और वहां आस-पास के 40 गांवों की कमेटी बनाई गई जो उसकी देखरेख करेगी। इस गोशाला में लगभग 2500 से 3000 तक गोवंश सुरक्षित एवं संरक्षित रहती हैं। इसके साथ-साथ आचार्य श्री ने गाय की नस्ल-सुधार के लिए वहीं पास में ही 'नस्ल-सुधार केन्द्र' का निर्माण किया जिसमें उत्तम नस्ल के साण्डों का सीमन भण्डारण होता है।

9. गोशाला संघ की अध्यक्षता-30 अक्तूबर 1999 को पानीपत में हरयाणा की सभी गोशालाओं की सभा हुई जिसमें सबने सर्वसम्मति से आपको गोशाला संघ हरयाणा का अध्यक्ष बना दिया। इसके लिए आपने गोशालाओं की सुधार नीतियां बनाईं।

10. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता-2003 में स्वामी ओमानन्द जी के शरीर पूरा होने के बाद सभी आर्यों ने सर्वसम्मति से आचार्य बलदेव जी को सभा का प्रधान मनोनीत कर दिया। इस पद पर आने के बाद आपने समाज-सुधार के अनेक प्रकल्प चलाये।

11. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता-जुलाई 2012 को सर्वसम्मति से आपको आर्यों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

12. आन्दोलन-आचार्य श्री ने अनेक सफल आन्दोलन चलाये जो समाज में फैल रही कुरीतियों एवं पाखण्डों को रोकने के लिए अत्यावश्यक थे जिनमें प्रमुख हैं—

- 21 जुलाई 2001 को पलवल की ऐतिहासिक सर्वखाप पंचायत।
- 7 अक्तूबर 2001 का पुन्हाना का विशाल गोरक्षा महासम्मेलन।
- 2006 और 2013 का करौंथा काण्ड।
- 23 नवम्बर 2003 का आर्य महासम्मेलन।
- 2010 संस्कृत रक्षा आन्दोलन।
- 2012 गोरक्षा महासम्मेलन।
- 2014 हरफूल जाट जुलाणी का बलिदान सम्मेलन
- 2015 आर्य युवा महासम्मेलन।

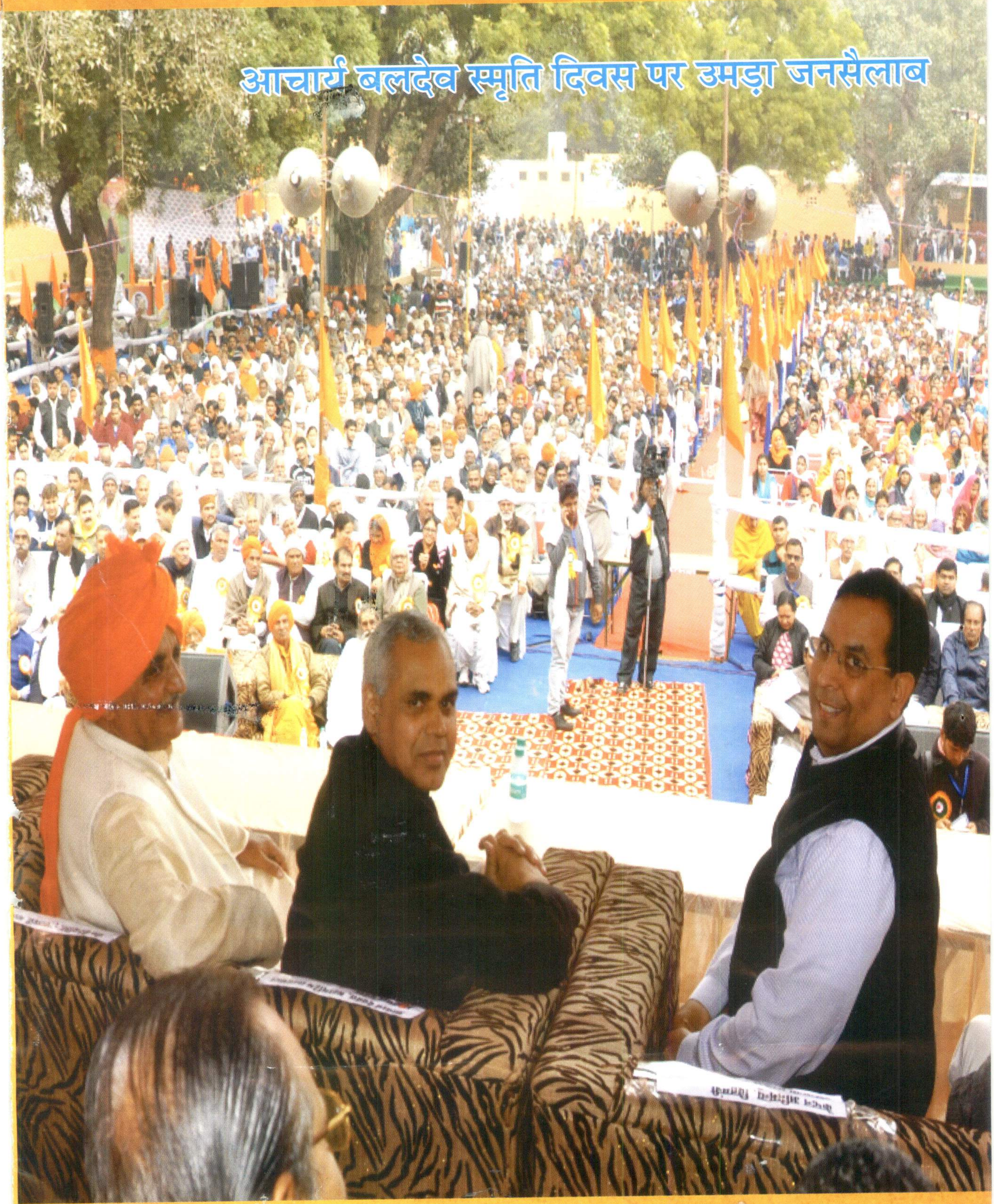
आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर उमड़ा जनसैलाब

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस

ओ३म्
आचार्य बलदेव जी स्मृति स्तूप

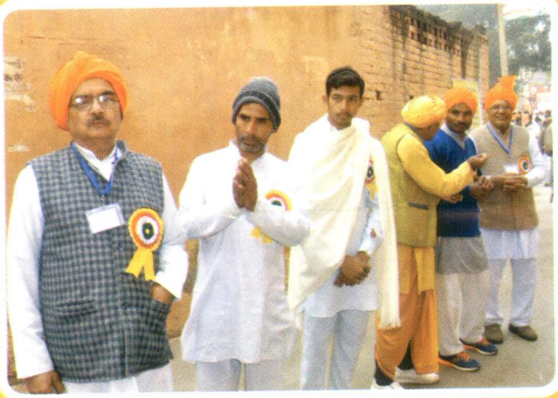

ओ३म्

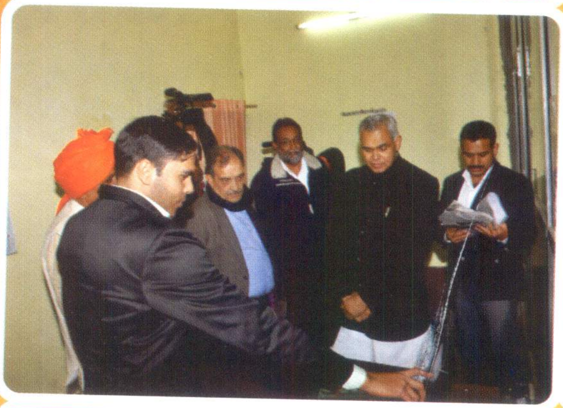

ाचार्य बलदेव स्मृति दिवस
28 जनवरी 2017

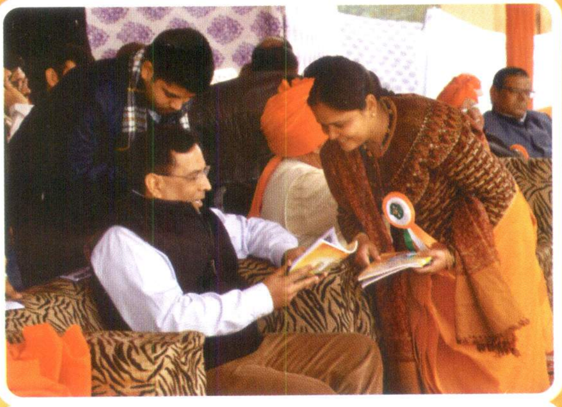

28 जनवरी 2017

28 जनवरी 2017

बलदेव स्मृति दिवस
28 जनवरी 2017

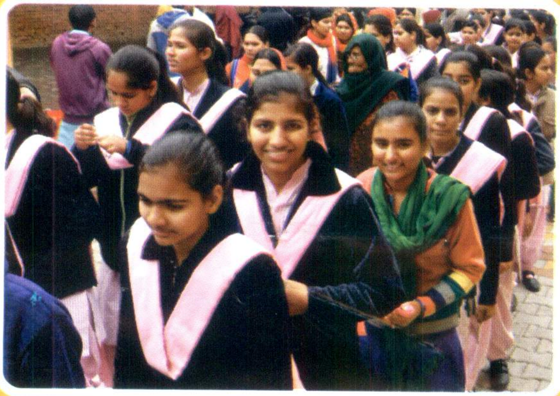

आचार्य बलदेव

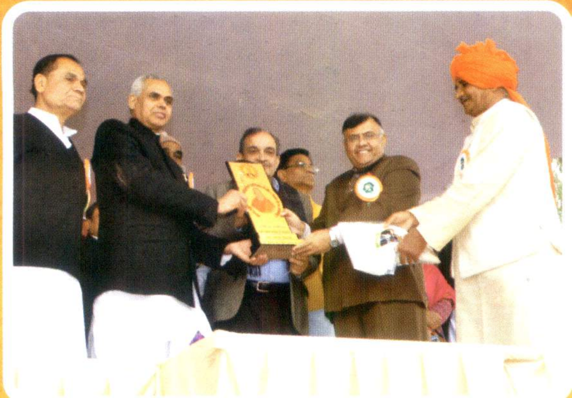

स्मृति दिवस

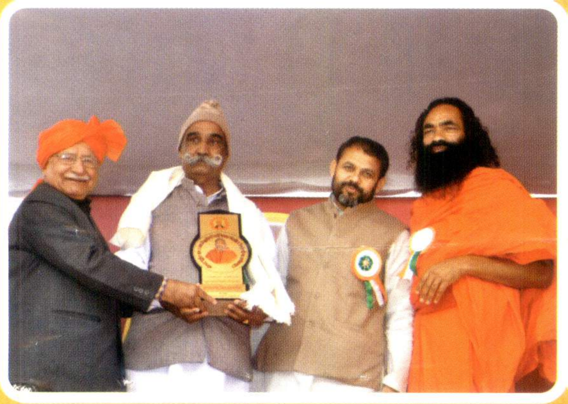

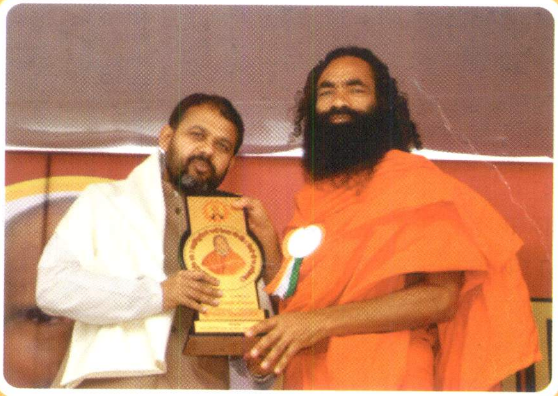

ऐसे थे गुरुवर हमारे

—आचार्य सर्वमित्र आर्य, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

इस आर्यावर्त भूमि पर प्राचीन काल से ही समय-समय पर ऋषि-मुनि, तपस्वी, साधु-संत, परोपकारी, समाज-सुधारक, राष्ट्रभक्त, गोभक्त, ईश्वर भक्तादि सद्गुणों से युक्त महापुरुष जन्म लेते रहे हैं। जो जन्म लेकर अपने सत्संग के द्वारा भटके हुए लोगों को एक नूतन जीवन देते रहे हैं। इसी शृंखला में संत शिरोमणि आचार्य बलदेव जी महाराज का नाम अग्रणी है।

आचार्य बलदेव जी आर्यजगत् के मूर्धन्य साधुओं में अद्वितीय थे। आचार्य जी वेद, व्याकरण, महाभाष्म के अध्ययन करने के पश्चात् अपना सम्पूर्ण जीवन समाज, राष्ट्र के निर्माण के लिए प्राचीन शिक्षा व वेदों की रक्षार्थ, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। हमारा भी सौभाग्य रहा कि आचार्य बलदेव जी के साथ गोरक्षा व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए कुछ कदम साथ दे सके। आचार्य जी भूख-प्यास की परवाह किए बिना दिन-रात रहते थे व बड़े उत्साही थे। ईश्वर और महर्षि दयानन्द के परम-भक्त थे। वे सदा कहा करते थे कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपना सर्वस्व न्यौछावर करके आर्यसमाज की स्थापना की है। इसको बढ़ाने व सुरक्षा की हम सबकी जिम्मेवारी है। किसी भी बात को आचार्य जी ने पहले अपने जीवन में उतारते थे फिर दूसरों को संकेत मात्र उपदेश देते थे। आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। वे सदा प्रात: चार बजे से पहले उठकर ईश्वर का ध्यान आदि करके अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। रुग्ण अवस्था में भी यही दिनचर्या थी। अंतिम समय 28 जनवरी 2016 को भी रात को लगभग 1:30 पर श्री जयपाल जी के साथ आचार्य जी गुरुकुल कालवा से चले। धुंध के कारण लगभग चार बजे दयानन्दमठ में पहुंचने के पश्चात् अपने सेवक जयपाल आर्य को विश्राम करने को कहकर शौचादि कर भ्रमण करने लग गए थे, लेकिन किसी को क्या पता था कि यह भ्रमण अंतिम भ्रमण होगा।

परिवर्तिनि संसारे मृत को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्॥

संसार परिवर्तनशील है, जो भी उत्पन्न हुआ है वह ईश्वर व्यवस्था से मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। यह क्रम अनादि काल से चला आ रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा। सामान्य व्यक्ति जन्म लेते रहते हैं और मरते रहते हैं। उनसे संसार में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

किन्तु जिन महान् व्यक्ति के बिछुड़ने से समाज और राष्ट्र की महान् क्षति हो जाये, ऐसे व्यक्ति का संसार से चले जाना बड़ा दु:खद व अभावजन्य होता है। ऐसे ही महापुरुषों में परम पूज्य गुरुवर आचार्य बलदेव जी महाराज थे। उनके वियोग से समस्त आर्यजगत्, गुरुकुल व आर्य-संस्थायें, ब्रह्मचारी, संन्यासी आदि अनाथवत् हो गए हैं।

जनवरी में मैं केरल में था। 20-22 जनवरी को मैंने फोन के द्वारा आचार्य बलदेव जी से बात की थी। मैंने उस समय कहा था कि गुरुजी आप केरल में आ जाओ तो उन्होंने कहा कि 28 जनवरी के बाद बताऊंगा, लेकिन 28 जनवरी को सुबह लगभग 5 बजे आचार्य योगेन्द्र जी ने मुझे फोन पर बताया कि आप जल्दी वापिस रोहतक आ जाओ। गुरुजी गिर गए और चोट लग गई। उनकी सेवा में रहना पड़ेगा। मैंने तुरन्त हाँ कर दी और तत्काल हवाई जहाज के माध्यम से आने की तैयारी शुरू कर दी थी, क्योंकि पूज्य आचार्य जी की मुझ पर विशेष कृपादृष्टि थी। वे मुझे भी अपने पास रखकर खुश रहते थे और मुझे गुरुजी की सेवा करके बड़ा आनन्द आता था। (क्योंकि मैं अपना जीवन आचार्य जी को समर्पण कर चुका था। जिस समय मैं पढ़ता था, उस समय से ही आचार्य जी घर पर आते जाते थे, परन्तु एक दिन दयानन्द मठ में आर्ष विद्या पढ़ने व नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि राजा बन प्रजा तो सारी दुनिया है ही। 11 अगस्त 2006 को मुझे पढ़ने के लिए अजमेर भेजा। उसके पश्चात् 2011 से अपने पास रखकर गोशाला संघ व गोरक्षा दल का कार्य सौंपकर आशीर्वाद दिया था) परन्तु आचार्य योगेन्द्र जी का प्रात: 6:30 बजे फिर फोन आया कि आचार्य जी सदा के लिए हमें छोड़कर चले गए। यह बात सुनते ही मेरा शरीर सुन्न-सा हो गया तब लगा कि हम अनाथ हो गये, क्योंकि जब भी कहीं से आते तो आते ही पूरे कार्य की सूचना देते।

जो व्यक्ति संसार से प्रभावित होता है, उसे ईश्वर की सहायता नहीं मिलती।

मार्गदर्शन करते रहते थे। कोई सम्मेलन या आंदोलन करते तो उत्साह के साथ बाधाओं से निपटने की प्रेरणा देते थे। जिस भी कार्य को करते तो बड़ी सूझबूझ के साथ करते थे। आर्यसमाज के स्तम्भ थे, उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग एवं पवित्रता से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी।

आचार्य जी सत्य की रक्षा के लिए हमेशा अडिग रहते हुए मर-मिटने को तैयार रहते थे। चाहे गोरक्षा के लिए मेवात, गुड़गांव व स्वामी दयानन्द विरोधी व वेद निन्दक रामपालदास के खिलाफ आंदोलन करके सरकार को भी झुका दिया, कभी पीछे हटे नहीं। आचार्य जी ने कभी भी अपने विरोधियों का अहित नहीं चाहा। सबकी भलाई व सबका उपकार चाहा। संन्यासी व ब्रह्मचारियों के लिए आचार्य जी अपना सब कुछ लगा दिया करते थे। बड़ी सेवा की इच्छा रखते थे। आचार्य जी लगभग 150 ब्रह्मचारी, विद्वान्, आचार्य, संन्यासियों के प्रेरणास्रोत रहे।

आचार्य जी आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान होने के बावजूद भी दूसरे मठाधीशों की तरह शान-शौकत से नहीं रहते थे। बड़ा त्यागी-तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए बिल्कुल साधारण रहते थे। दूसरों को पहले नमस्ते करते थे। अपने शिष्यों को कहते थे—लाण्डा बुचा सबसे ऊँचा। वे हमेशा कर्म करने में विश्वास करते थे दिखवे में नहीं।

आचार्य बलदेव जी महाराज का जीवन त्याग, पवित्रता, निष्कलंक, अर्थशुचिता, परोपकारप्रियता, सबके साथ मधुरता का व्यवहार और गम्भीरता आदि गुणों की प्रबलता स्पष्ट देखी जा सकती है। ऐसे महान् व्यक्तित्व के अभाव की पूर्ति निकट भविष्य में होनी अति कठिन है। आर्यसमाज के हितार्थ जो कार्य किया उसे भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे गुणी आचार्य को खोकर हम सभी अनाथ होकर रह गए, किन्तु ईश्वर की व्यवस्था के सम्मुख सभी पराधीन होते हैं। यही सोचकर मन को सन्तुष्ट करना पड़ता है।

अब हम सब आर्यजनों और शिष्यजनों का कर्त्तव्य है कि आचार्य जी के बताए हुए पदचिह्नों पर चलें तभी हमारा कल्याण सम्भव है।

ऐसे महामानव को मेरा शत-शत प्रणाम।

एक दिव्य प्रेरणा-पुंज

❑ दिनेश आर्य, महामन्त्री, गोरक्षा दल हरियाणा

गत दिनों स्मृति शेष पूज्य आचार्य बलदेव जी का स्मृति-दिवस मनाया गया। मैं समझता हूँ कि उस दिवस को स्मृति दिवस के साथ-साथ प्रेरणा-दिवस भी कह सकते हैं, क्योंकि जो-जो भी व्यक्ति यहाँ पधारे थे, उसमें चाहे कोई राजनेता हो या कोई सामान्य व्यक्ति हो वह यहां से प्रेरणा लेकर ही गया। पूज्य आचार्य जी का व्यक्तित्व कोई सामान्य व्यक्तित्व नहीं था। जीवन के हर मोड़ पर प्रत्येक आश्रम के प्रत्येक कर्त्तव्य के लिए पूज्य आचार्य जी एक आदर्श रूप में खड़े मिलते हैं। एक सेवक के रूप में आचार्य जी समाज की सेवा में वह एक वैश्य के रूप में अपने कर्मफल के हिसाब-किताब में व अर्थशुचिता में क्षत्रिय के रूप में पाखण्ड व बुराई के खिलाफ लड़ने में, एक ब्राह्मण होकर विद्या दान व उच्च आदर्शों वाले जीवन जीने में, प्रत्येक वर्ण के लिए वे एक आदर्श व प्रेरणापुंज थे। वे एक व्यक्ति न होकर आदर्श संस्थान थे, जिन्होंने धर्म के लक्षणों और वैदिक मूल्यों को जीवन में धारण कर दिखाया था। ऐसा व्यक्तित्व भला किसके लिए प्रेरणास्रोत न होगा।

मौसम खराब होने पर भी हज़ारों की संख्या में लोगों का इकट्ठा होना यह दर्शाता है कि किस प्रकार आचार्य जी लोगों के दिलों पर राज करते थे। यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न एवं पूज्य आचार्य जी के प्रति कृतज्ञ था। प्रत्येक व्यक्ति सभा के अधिकारियों के प्रति आश्वस्त एवं आशावान था कि आचार्य जी के कार्य को सभा के युवा अधिकारीगण अवश्य पूर्ण करेंगे। जिस प्रकार श्रद्धेय आचार्य योगेन्द्र जी ने पूज्य आचार्य बलदेव जी के गो-सेवा के कार्य को बखूबी आगे बढ़ाया है, इससे आर्यजनता को यह विश्वास हो गया है कि आर्यसमाज के कार्य को भी यह आचार्यगण गति प्रदान करेंगे और पूज्य आचार्य जी के पदचिह्नों पर चलकर आचार्य जी का गौरव हरियाणा ही नहीं वरन् पूरे भारत में फैलायेंगे।

स्मृति दिवस पर पधारे प्रत्येक व्यक्ति को मैं गोरक्षा दल हरियाणा की तरफ से धन्यवाद देता हूँ एवं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं आर्य जनता को विश्वास दिलाता हूँ कि गोरक्षा दल हरियाणा सभा के प्रत्येक गोहितकारी कार्य में तन-मन-धन से साथ रहेगा।

आयुर्वेद-मर्मज्ञ थे पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी

पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी महाराज व्याकरण के मूर्धन्य विद्वान् थे। उन्होंने अनेक योग्यतम शिष्यों को पढ़ाया और समाज में फैली पाखण्ड, अंधविश्वास जैसी कुरीतियों के खिलाफ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आज उनके शिष्यगण समाज में एक विशिष्ट स्थान पर हैं और उनका मान-सम्मान पूरा भारत ही नहीं विश्व भी करता है। वैयाकरण के रूप में उनकी गुरु विरजानन्द जैसी प्रत्युत्पन्न बुद्धि थी। कठिन से कठिन शंका का समाधान भी वे सरल ढंग से करते थे, इसीलिए अभाव होते हुए भी उनके पास अन्य गुरुकुलों की अपेक्षा ज्यादा ब्रह्मचारी पढ़ते थे। वैयाकरण के अतिरिक्त वे आयुर्वेद के भी महान् मनीषी थे।

समाज को जोड़ने के लिए उन्होंने गुरुकुल में पढ़ाई के अतिरिक्त एक औषधालय भी चलाया जिसके माध्यम से आस-पास की जनता की सेवा की। ब्रह्मचारियों को भी वे आयुर्वेद की शिक्षा देते थे। वर्तमान काल में स्वामी रामदेव जी एवं आचार्य बालकृष्ण ने जो आयुर्वेद का प्रकल्प चला रखा है, उसके पीछे आचार्य बलदेव जी का ही योगदान है। उनकी मान्यता थी कि प्रत्येक साधु-संन्यासी को आयुर्वेद का ज्ञान होना चाहिए। खुद आचार्य श्री ने अनेक लोगों को रोगमुक्त किया। इसके पीछे उनकी धन कमाने की इच्छा न होकर केवल समाजसेवा की मंशा थी। कई बीमारियों पर आचार्य जी की बहुत अच्छी पकड़ थी उनमें सर्पदंश चिकित्सा एक थी। गुरुकुल के आस-पास का इलाका धान का है। वर्षा के कारण सांप के काटे के अनेक लोग वहां आते हैं जिनका इलाज आचार्य श्री बहुत अच्छी प्रकार से करते हैं। इसके साथ ही दूर-दूर से अनेक व्यक्ति सर्प काटे की चिकित्सा के लिए आते थे। आचार्य जी ने हजारों रोगियों को मौत के मुंह से बचाया।

आचार्य श्री सर्दी, जुकाम, बुखार के पंचकोल चूर्ण का प्रयोग करते थे। कब्ज, गैस आदि के लिए हिंग्वाष्टक चूर्ण एवं पंचसकार चूर्ण प्रयोग करते थे। जीर्ण बुखार एवं कमजोरी में स्वर्ण वसन्त मालती का प्रयोग करते थे। मोतीझारा आदि बुखारों में दूध में मुनक्का उबालकर खाने को बताते थे, जो एक कारगर इलाज है। खाज-खुजली, सोराईसिस आदि चर्मरोगों में कायाकल्प वटी, रक्तशोधक वटी देते थे। खाने को केवल चने की रोटी एवं घी ही बताते थे जिससे अनेक रोगियों ने आरोग्यता पाई। आचार्य श्री की इच्छा थी कि आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार घर-घर हो ताकि लोग विनाशकारी एलोपैथी चिकित्सा से बचे रहें और उनका धन-धान्य भी बचा रहे, क्योंकि एलोपैथी की अपेक्षा आयुर्वेदिक चिकित्सा सस्ती कारगर एवं हानि रहित है। उनके द्वारा प्रयोग किये गए कुछ कारगर नुस्खे आप सबके लिए दे रहे हैं—

बच्चों की स्मरणशक्ति के लिए—50-50 ग्राम चारों मगज, 100 ग्राम ब्राह्मी, 20 ग्राम बच मीठी, 50 ग्राम सौंफ, 50 ग्राम बादाम, सबको कूट-पीसकर सबके समान मिश्री मिलाकर दूध से लें।

सर्दी-जुकाम-बुखार-लक्ष्मी विलास, त्रिभुवन कीर्ति रस एक-एक गोली, प्रवाल पिष्टी दो रत्ती, गोदन्ती तीन रत्ती, अमृता सत दो रत्ती। सबको मिलाकर शहद के साथ सुबह-शाम लें।

जोड़ों के दर्द के लिए-बृहद् वात चिन्तामणि रस एक गोली, प्रवाल पिष्टी दो रत्ती, जहरमोहरा एक रत्ती, स्वर्ण माक्षिक दो रत्ती, सबको मिलाकर शहद के साथ लें। उपरोक्त सभी की एक खुराक है।

—वैद्य रमेश शास्त्री, 9068957694,
आचार्य बलदेव औषधालय, दयानन्दमठ, रोहतक

आचार्य बलदेव जी का व्यक्तिगत-परिचय

नाम : आचार्य बलदेव

गुरु का नाम : स्वामी ओमानन्द सरस्वती

जन्म : 19 जनवरी 1931 (माघ प्रतिपदा 1987)

जन्मस्थान : गाँव व डा० सरगथल, जिला सोनीपत

शैक्षिक योग्यता : बी.ए., जाट कॉलेज, रोहतक

सरकारी सेवा : विद्युत् विभाग, हरियाणा सरकार

गृह-त्याग : सन् 1959 ई०

गुरुकुलीय शिक्षा : व्याकरणाचार्य, निरुक्ताचार्य, उपनिषद्, दर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं वेद-वेदांग।

आचार्य पद

- महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर 1962 से 1971 तक
- गुरुकुल कालवा, सन् 1971 से 2000 तक

आर्ष-प्रचारकों का निर्माण :

योगर्षि स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी हरिद्वार, आचार्य ज्ञानेश्वर जी रोजड़ (गुजरात), स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (प्रभात आश्रम मेरठ), डॉ० सतीश प्रकाश (अमेरिका), डॉ० शोभानन्द (गयाना), डॉ० योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधानसभा स्पीकर, दिल्ली), आचार्य आर्यनरेश (हिमाचल प्रदेश), आचार्य अखिलेश्वर, ब्र० राजसिंह आदि लगभग 145 युवा ब्रह्मचारियों व संन्यासियों को विशुद्ध आर्ष प्रणाली में शिक्षित कर समाज के लिए अनेक विद्वान् एवं उपदेशक तैयार किये।

विशेष रुचियां :

- आर्ष गुरुकुलीय शिक्षा का पठन-पाठन।
- राष्ट्रवादी चिन्तन एवं भारतीय संस्कृति को जनमानस तक पहुंचाना।
- वैदिक मूल्यों पर व्याख्यान।
- समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना।
- युवाओं को नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना।
- आर्यसमाज की वैदिक गतिविधियों का आयोजन।
- गो-नस्ल-सुधार व गोरक्षा हेतु सम्मेलन व शिविरों का आयोजन करना।
- वृक्षारोपण एवं यज्ञ चिकित्सा द्वारा प्रदूषणमुक्त समाज रचना।
- पुस्तक-लेखन करना।
- पाखण्ड के खिलाफ जनमानस को जागृत करना।

वेदप्रचार एवं भारतीय संस्कृति हेतु निम्न देशों की यात्राएं

संगठन प्रवेश :
- **संचालक,** आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द
- **संस्थापक,**राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली, जिला जीन्द
- **संस्थापक,** महर्षि दयानन्द ईटीटी रिसर्च सेंटर धड़ौली, जिला जीन्द
- **कुलपति,** श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर
- **अध्यक्ष,** गोशाला संघ हरियाणा, रोहतक 1999 से 2011 तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **अध्यक्ष**, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक 2003 से 2010 तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **अध्यक्ष**, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली जुलाई 2012 से वर्तमान तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **संरक्षक,** गोशाला संघ हरियाणा 2011 से वर्तमान तक
- **संरक्षक,** आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा 2010 से वर्तमान तक
- **संरक्षक,** गोरक्षा दल हरियाणा 2012 से वर्तमान तक
- **सदस्य,** भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई
- **सदस्य,** हरियाणा गोसेवा आयोग, चंडीगढ़

विदेश यात्राएं
- दक्षिण अफ्रीका, मौरीशस।

लेखन व संपादन
- अष्टाध्यायी प्रवेश
- संस्कृत वाक्य प्रबोध
- महाभाष्य प्रथम आह्निक भाष्य
- अंग्रजी वाक्य प्रबोध

सम्मान एवं पुरस्कार :
- वेदमार्तण्ड पुरस्कार (माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट दिल्ली द्वारा)
- आर्यरत्न शिक्षा पुरस्कार (राव हरिश्चन्द्र आर्य, चैरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर)
- गोसंवर्धन पुरस्कार (राव हरिश्चन्द्र आर्य, चैरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर)
- पं० लेखराम पुरस्कार (आर्यसमाज हिण्डौन सिटी, राजस्थान)
- आर्य गोशाला पुरस्कार (श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर)
- पशु-प्रेम पुरस्कार(पीपुल्स फॉर एनीमल्स, दिल्ली)
- पंडित युधिष्ठिर मीमांसक पुरस्कार (आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई)

प्रशंसा व अभिनन्दन पत्र
- परममित्र मानव निर्माण न्यास, रोहतक
- गुरुकुल आमसेना उड़ीसा
- आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत
- आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत
- आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव
- आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद
- केन्द्रीय युवक परिषद्, दिल्ली

लक्ष्य एवं उद्देश्य :
- वैदिक संस्कृति, गोसंवर्धन एवं प्राचीन गौरव को प्रतिष्ठित तथा संवर्धित करना एवं मानवमात्र में वेदज्ञान को विकसित करना।

प्रायः व्यक्ति को यह विश्वास नहीं होता है कि ईश्वर भी गुरु की तरह सहायता करता होगा।

आर्य प्रतिनिधि समाचार-पत्र में आचार्य जी द्वारा लिखे गए लेखों की झलकियाँ

ईश्वर कृपा से ही शुभकार्य

त्वमग्ने यज्ञानाॐहोता विश्वेषाॐहितः।
देवेभिर्मानुषे जने॥ 2॥ (सामवेद)

शब्दार्थ—हे [अग्ने] उन्नति की ओर ले जाने वाले प्रभो! [त्वम्] आप [विश्वेषाम्] सब [यज्ञानाम्] शुभकर्मों के [होता] सम्पन्न कराने वाले हो [देवेभिः] प्रकाशित गुणों वाले आप [मानुषे जने] मननशील मनुष्य में [हितः] विराजमान होते हो।

व्याख्या—जो शुभकर्म जीव (मनुष्य) कर रहा है प्रभु की कृपा का ही फल है। प्रभु की दी गई शक्ति का ही परिणाम है। अच्छे कर्म के लिये उत्साहित करना तथा श्रेष्ठ कर्म करने से हृदय में साहस प्रदान करना उस प्रभु की शुभ कार्य कराने की शैली है। बुरे कार्यों से भय, शङ्का व लज्जा उत्पन्न करना तथा अच्छे कार्य करने के लिये प्रेरणा देना। प्रभु की बुरे कार्य से हटाने तथा श्रेष्ठ कार्य कराने की नीति है। मनुष्य अल्पज्ञतावश ईश्वर की प्रेरणा न सुनकर दुष्टकर्मों से प्रवृत्त हो जाता है, उसका उत्तरदायित्व मनुष्य का होता है।

आत्मा का दर्शन

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्।
तद्विदच्छर्यणावति॥ (साम० 914)

अर्थ—(पर्वतेषु) मेरुदण्ड में स्थित चक्रों में (अपश्रितम्) स्थित (अश्वस्य) शरीर में व्याप्त आत्मा का (यत् शिरः) जो मुख्य स्थान है (तत् इच्छन्) उसे जानने की इच्छा वाले योगी ने उसे (शर्यणावति) हृदय में (विदत्) प्राप्त किया।

आत्मा का स्थान कहाँ है? और आत्मा विभु है या परिच्छिन्न, इसमें अनेक मत हैं। यदि आत्मा को विभु माने तो जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता। इसलिये जीव का स्वरूप अल्पज्ञ, अल्प अर्थात् सूक्ष्म है और वह परिच्छन्न है।

सच्ची उपासना ही पहिचान

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि॥ 6॥

तुम्हें ऐश्वर्य प्राप्त होगा, वृद्धि होगी, तुम वासनाओं को नष्ट कर पाओगे और शतक्रतु बनोगे। इस मंत्र में उसी बात को वे दूसरी प्रकार से कहते हैं कि यदि तुम्हारी वृद्धि होती है, तुम वासनाओं का विनाश कर पाते हो और तुम्हारे अन्दर एक ज्योति उत्पन्न होती है तब तो समझ लो कि तुम्हारा स्तवन ठीक है, अन्यथा नहीं। वे कहते हैं कि ऐ [मरुतः] = विषयों के प्रति लालायित होने वाले पुरुषो! उस [इन्द्राय] = परमैश्वर्य के दाता प्रभु के लिये [गायत] = गायन करो। जो गायन [बृहत्] = तुम्हारी वृद्धि का कारण है। [वृत्रहन्तमम्] = अधिक से अधिक वासनाओं का विनाश करने वाला है और [येन] = जिससे [ज्योतिः] = प्रकाश को (ज्ञान को) [अजनयन्] = अपने में उत्पन्न करते हैं। कैसे प्रकाश को? [देवं] = जो प्रकाशमय है तथा [देवाय] = आत्मा के लिये [जागृवि] = जगाने वाला है। कौन उत्पन्न करते हैं? [ऋतावृधः] = ऋत के द्वारा नियमितता के द्वारा अपना वर्धन करने वाले।

पवित्रता व शक्ति

आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोम वीरवत्।
वाजं गोमन्तमाभर स्वाहा॥ 63॥ (यजुर्वेद)

यह प्रभु का सोम नाम से स्मरण करता है। यह सोम शरीर में वीर्य का भी प्रतिपादक है। यज्ञियवृत्ति से शरीर में इस सोम की रक्षा होती है। इस सुरक्षित सोम से हम अन्ततः उस सोम—'प्रभु' को प्राप्त करने वाले बनते हैं। इस सोम से यह कश्यप-पश्यक-प्रभुद्रष्टा प्रार्थना करता है कि—1. **सोम**=हे शान्त, ज्ञानमय प्रभो! **आ पवस्व**=आप हमारे जीवन को सर्वथा पवित्र कर दो। 2. और **वाजम्**=उस शक्ति को **आभर**=हम में सर्वथा भर दो जो (क) **हिरण्यवत्**='**हिरण्यं वै ज्योतिः**'=ज्ञान से युक्त है। हमारी शक्ति के साथ ज्योति का समन्वय हो। (ख) **अश्ववत्**=(अश्नुते कर्मसु) जो शक्ति कर्मों में व्याप्त होने वाली है।

समाचार-प्रभाग

आर्यसमाज सुन्दर नगर (फतेहाबाद) का मासिक सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दर नगर फतेहाबाद का मासिक सत्संग 29.1.2017 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रातः 9.00 बजे पुरोहित सतीश शास्त्री ने यज्ञ करवाया। सुषमा और सुमन, सुमनलता एडवोकेट आदि ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे तथा यशवीर आर्य बोदीवाला ने समाज सुधार के भजन रखे। आर्यसमाज सिरसा के पुरोहित राजेन्द्र शास्त्री ने सत्संग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। सत्संग के मुख्यवक्ता वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने योग पर आध्यात्मिक प्रवचन रखा तथा उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती का हवाला देकर कहा कि विद्वान् सभी नहीं हो सकते लेकिन धार्मिक होना जरूरी है। इनका प्रवचन एक घण्टे तक नर-नारियों ने बड़ी श्रद्धा से सुना। मंच का संचालन समाज के मंत्री डॉ० राजवीर शास्त्री ने किया। अस अवसर पर महावीर आर्य, राजेन्द्र आर्य, रामकुमार आर्य कोषाध्यक्ष, नन्दलाल आर्य, भूपसिंह पटवारी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री बंसीलाल आर्य अन्त में विद्वानों व उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया। **—राजबीर शास्त्री, मंत्री आर्यसमाज**

श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

गांव माजरा रहेड़ा जिला कैथल में 20.1.17 को ब्र० दीपकुमार आर्य के चाचा रणधीर सिंह आर्य का निधन होगया। 27 तारीख को शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया जिनकी उम्र 85 वर्ष की थी। आचार्य पं० रामसरूप शास्त्री ने यज्ञ कराया। आत्मा-परमात्मा पर सारगर्भित प्रवचन दिया। इनके अतिरिक्त मानसिंह जी पाठक, वेदप्रचार मण्डल के प्रधान रामकुमार आर्य, महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल आदि ने अपने विचार रखे और उनको सच्ची श्रद्धांजलि दी। परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके द्वारा किये कार्यों को पूरा करने की शक्ति दे। ब्र० दीपकुमार आर्य ने अपने चाचा को परिश्रमी, निडर गुणों की चर्चा करते हुए विद्वानों का तथा काफी संख्या में पधारे नर-नारियों का धन्यवाद किया। व अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए। इस अवसर पर चौ० युद्धवीर सिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज सिरसा, श्री जयप्रकाश विधायक, डॉ० प्रमोद योगार्थी प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार ने भी श्रद्धांजलि दी।

जन्मदिवस पर यज्ञ

आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के संस्थापक स्व० महाशय हीरालाल जी आर्य का 111वां जन्मदिन बड़ी धूमधाम से आर्यसमाज के प्रांगण में दिनांक 15 जनवरी 2017 को मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकाल 9 बजे बृहद् यज्ञ हवन के साथ किया गया। रेवाड़ी जिला वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष स्वामी जीवानन्द जी 'नैष्ठिक' के ब्रह्मत्व में आस-पास के गांवों व आर्यसमाजों से आए सैकड़ों आर्य भद्र पुरुषों ने यज्ञ सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् ईशरोदा (अलवर) से पधारे विद्वान् भजनोपदेशक म० धर्मपाल आर्य की संगीतमय प्रस्तुति से श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गए। म० जसवन्त सिंह आर्य व श्री रामकिशन शास्त्री ने अपने उद्बोधन में महाशय जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री सौम्य मुनि व स्वामी ब्रह्मानन्द जी 'एकान्ती' की उपस्थिति इस सभा को चार चाँद लगा गई। महाशय हीरालाल जी के शिष्य मास्टर दीनदयाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अपने गुरु जी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी मंच का संचालन श्री जयप्रकाश आर्य ने किया। दोपहर 1 बजे भोजन के बाद समारोह सम्पन्न हुआ। **—प्रो० धर्मवीर नम्बरदार, मन्त्री**

निर्वाचन

आर्यसमाज कारोली, जिला रेवाड़ी का चुनाव 25.12.2016 को कार्यवाहक प्रधान श्री हरिप्रकाश आर्य की अध्यक्षता में होकर सर्वसम्मति से निम्नलिखित को चुना गया—प्रधान-श्री हरिप्रकाश आर्य, उपप्रधान-श्री सूरजभान आर्य, मन्त्री-श्री रामकुमार आर्य, उपमन्त्री-अजीतसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-धर्मवीर आर्य, प्रचारमन्त्री-ओमप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-धर्मवीर आर्य, संरक्षक-श्री रायसिंह आर्य।

स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव एवं महर्षि बोधोत्सव महाशिवरात्रि का आयोजन

आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम एवं आर्यसमाज सैक्टर-7 एक्स., गुरुग्राम के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 21 से 24 फरवरी 2017 तक आर्यसमाज सेक्टर-7 एक्स., गुरुग्राम में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है जिसमें अनेक साधु-संन्यासी, विद्वान् एवं राजनेता पधार रहे हैं। अतः आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

ऋग्वेद | यजुर्वेद

ओ३म

महर्षि दयानन्द सरस्वती

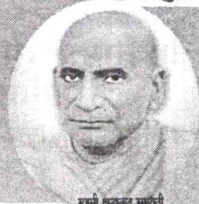

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद

(स्वामित्व - आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा)

का

शताब्दी समारोह

दिनांक - 18-19 फरवरी, 2017 (शनिवार, रविवार)

स्थान - गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आर्य नगर सराय ख्वाजा, फरीदाबाद, हरियाणा

सान्निध्य	मुख्य अतिथि	अध्यक्षता
आचार्य देवव्रत जी	माननीय मनोहर लाल खट्टर जी	माननीय पूनम सूरी जी
महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश	मुख्यमंत्री हरियाणा	प्रधान, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री, नई दिल्ली

ध्वजारोहण एवं आशीर्वाद माननीय महाशय धर्मपाल जी, निदेशक एम.डी.एच

विशिष्ट अतिथि-

माननीय कृष्ण पाल गुर्जर, केन्द्रीय राज्य सामाजिक न्याय एवं सशक्तीकरण मंत्री
माननीय कैप्टन अभिमन्यु, वित्त मंत्री हरियाणा
माननीय विपुल गोयल, उद्योग मंत्री हरियाणा
श्रीमती सीमा त्रिखा, मुख्य संसदीय सचिव, हरियाणा
मूलचन्द शर्मा, विधायक
टेकचन्द शर्मा, विधायक
नगेन्द्र भडाना, विधायक
ललित नागर, विधायक
सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
विनय आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
त्रिलोक चंद शर्मा, समाजसेवी गुड़गांव
डॉ. ओ३मप्रकाश जी महाराज, अध्यक्ष ओ३म् योग संस्थान ट्रस्ट

आमन्त्रित विद्वान-

स्वामी प्रणवानंद, गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली
स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल
डा. सुरेन्द्र, कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा अजमेर
आचार्य स्वदेश, मथुरा
आचार्य अखिलेश्वर, दिल्ली
आचार्य महेन्द्रपाल, दिल्ली
स्वामी धर्मदेव, पिल्लुखेड़ा जीन्द
डा. राजेन्द्र विद्यालंकार, कुरुक्षेत्र
डा. सारस्वत मोहन मनीषी, राष्ट्रकवि
सतवीर आर्य, महामंत्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल
जगवीर आर्य, संचालक आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश
डा. श्रीमती विमल मेहता, अध्यक्षा महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान फरी.
वेद प्रकाश आर्य, मंत्री आर्य वीर दल हरयाणा
हेमेन्द्र देव योगाचार्य

नोट : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एक ऐतिहासिक क्रान्तिकारियों (सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, असफाक उल्ला खां आदि) की शरणस्थली रहा है। सुभाष चन्द्र बोस को इसी स्थान पर छोटी सी कोठरी में आठ दिनों तक अज्ञातवास में रहना पड़ा था। अतः इस ऐतिहासिक गुरुकुल के भव्य शताब्दी समारोह में आप सभी सहपरिवार, इष्टमित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी तथा समस्त कार्यकारिणी

मा. रामपाल आर्य
प्रधान – आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी
मो. : 9416874035

कन्हैया लाल आर्य
उपप्रधान–आ.प्र. सभा हरयाणा एवं कोषाध्यक्ष गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी
मो.: 9911197073

आ. योगेन्द्र
मंत्री – आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
मो. : 9728333888

सुमित्रा आर्या
कोषाध्यक्ष आ.प्र. सभा हरयाणा
मो. : 9813235339

उमेद शर्मा
उपमंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
मो.: 9416503513

प्रेम कुमार मित्तल
महासचिव – गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी
मो. : 9818798217

प्रो. श्योताज
उपप्रधान–गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी
मो.9416429961

आजाद आर्य
पुस्तकाध्यक्ष–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
मो.: 9468240298

सर्वमित्र आर्य
उपमंत्री–गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी
मो.: 9468240298

संयोजक
आ. ऋषिपाल आर्य
प्राचार्य – गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
9811687124, 9990393132

मार्ग निर्देश – दिल्ली की ओर से आने वाले सराय ख्वाजा मैट्रो स्टेशन अथवा सराय ख्वाजा बस अड्डे पर उतरकर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पहुँचे। अपनी व्यक्तिगत बसों से आने वाले बदरपुर फ्लाईओवर से महरोली की ओर मुड़कर प्रहलादपुर लाल बत्ती से सूरजकुण्ड होते हुए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पहुँचे। मथुरा पलवल की ओर सेअपनी व्यक्तिगत बसों द्वारा आने वाले बड़खल चौराहे से अनखीर चौक, मानव रचना यूनिवर्सिटी, भडाना चौक से दाईं ओर मुड़ कर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पहुँचे। गुड़गांव से आने वाले पाली क्रेसर जोन चौराहे से बाएं मुड़कर मानव रचना यूनिवर्सिटी, भडाना चौक, से दाईं ओर मुड़ कर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पहुँचे।

सामवेद | अथर्ववेद

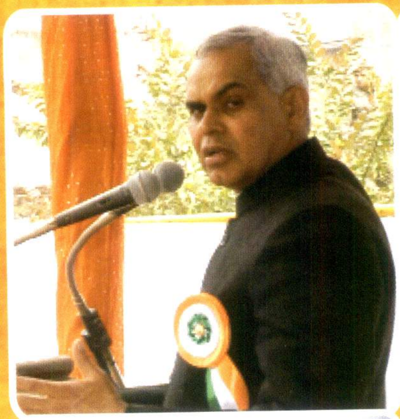
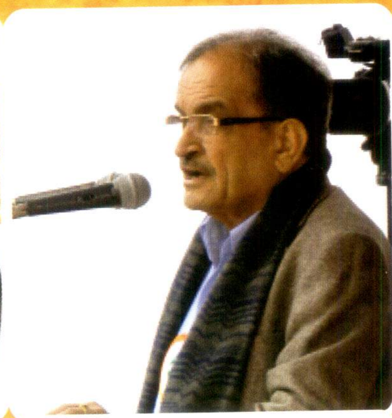

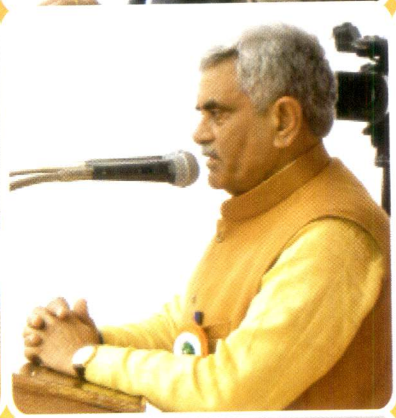

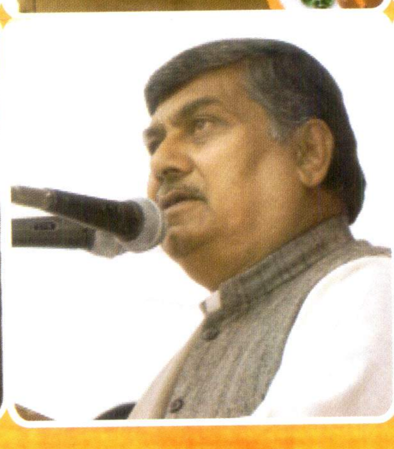

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस के अवसर पर आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश की अध्यक्षता में चौ० बीरेन्द्र सिंह इस्पात मंत्री भारत सरकार स्वामी स्वतंत्रानन्द बहु-उद्देशीय सभागार का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं कैप्टन अभिमन्यु जी वित्तमंत्री हरियाणा सरकार, श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी कृषिमंत्री हरियाणा सरकार, श्री मनीष ग्रोवर जी सहकारिता मंत्री हरियाणा सरकार, मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य योगेन्द्र आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्रीमती सुमित्रा आर्या कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं अन्य।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक आचार्य योगेन्द्र आर्य